ये अव्यक्त इशारे
अब बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो

1) समय प्रमाण अभी चारों ओर वैराग्य वृत्ति की आवश्यकता है। वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति में बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए जिससे देहभान से उपराम रहने की लहर फैले। तो देह की बातों से, देह की भावना और भाव से वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो तब श्रेष्ठ उन्नति होगी और प्रत्यक्षता का आवाज फैलेगा।

2) बेहद का वैराग्य तब आयेगा जब अपने को बेहद की सेवा में बिजी रखेंगे। इसके लिए मास्टर ज्ञान सूर्य बन सकाश देने की सेवा करते रहो। यह सकाश देने की सेवा ही निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात नहीं है। तो दिन रात इस सेवा में लग जाओ। बेहद में जाने से हद की बातें आपेही छूट जायेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

3) अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन आपका शिक्षक समय नहीं बनें, उससे माक्र्स कम हो जायेंगी। कई कहते हैं -- समय सब सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ।

4) ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। तन-मन-धन किसी में जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा यही बोल नेचुरल रहे कि यह बाबा का रथ है। तन से भी बेहद का वैराग्य रहा। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। कभी पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज़ नहीं की। तो ऐसे फालो फादर करो।

5) जैसे ब्रह्मा बाप ने कन्याओं, माताओं के आगे सब विल किया फिर उसमें मेरापन नहीं रखा। समय, श्वांस भी अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। सदा उपराम रहे। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। तो फालो फादर करो।

6) साकार में सर्व प्राप्ति के साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष आधार बेहद की वैराग्य वृत्ति रही। अभी सोने की जंजीरों के महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं, जो बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। कई समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। कई मुक्त होना चाहते हैं लेकिन चाहना और करना - दोनों का बैलेन्स नहीं है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज करो।

7) समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं, इसलिए उन्हें चेक करो और मुक्त हो जाओ। अगर किसी में सूक्ष्म लगाव भी होगा तो उड़ने नहीं देगा। इसलिए अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो।

8) अब समय प्रमाण सम्पूर्णता के दर्पण में सूक्ष्म लगावों को चेक करो और सब किनारे छोड़ मुक्त हो जाओ। यह नहीं सोचो मेरे पीछे क्या होगा। जैसे ब्रह्मा बाप ने यह नहीं देखा कि मेरे पीछे क्या होगा? सब और ही अच्छा हो रहा है, अच्छा होना ही है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, जिसमें कोई लगाव न हो।

9) मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना यह कोई कर नहीं सकेगा -- यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो।

10) बापदादा ने हर बच्चे को सब स्थूल साधन दिये हैं, जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। लेकिन बापदादा देखते हैं साधनों का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है साधना कम है। साधनों के प्रयोग का अनुभव तो बहुत किया, अब साधना को बढाओ तब बेहद की वैराग्य वृत्ति आयेगी।

11) विश्व में चारों ओर अभी इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं। इसलिए आप बच्चे अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

12) अब हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों के वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य।

13) समय की समीपता का फाउण्डेशन है --बेहद की वैराग्य वृत्ति। लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति के बजाय नये-नये प्रकार के छोटे-छोटे लगाव का विस्तार बहुत बढ़ रहा है, इस विस्तार ने सार को छिपा लिया है। मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है।

14) जैसे सेवा का वायुमण्डल बनाते हो, प्रोग्राम बनाते हो। ऐसे वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ जो सिर्फ दिमाग तक नहीं दिल तक यह वृत्ति पहुँचे। सबके दिमाग में तो है--होना चाहिये, करना चाहिये लेकिन दिल में ये लहर उत्पन्न हो जाये, इसकी आवश्यकता है।

15) सेवायें खूब की, सेन्टर खोले, बहुत बढाया, आई.पीज भी आ गये, वी.आई.पीज भी आ गये, ये तो होता ही रहता है लेकिन सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।

16) अब बेहद के वैराग्य वृत्ति पर स्वयं से भी चर्चा करो और आपस में भी चर्चा करके प्रैक्टिकल में इस साधना के बीज को प्रत्यक्ष करो। वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ, उसमें आलस्य और अलबेलेपन को मिक्स नहीं करो।

****